S-VI
Commun. Psy
DSE-4

सामुदायिक मनोविज्ञान का इतिहास
HISTORY OF COMMUNITY PSYCHOLOGY

सामुदायिक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक नवीनतम शाखा है जिसकी शुरुआत अमरीकी घटनाओं से हुई। 1955 मे अमरीकी सरकार ने मानसिक स्वास्थ्य को उन्नत बनाने के ख्याल से - Joint commission of mental health and illness (ज्वाइंट कमीशन आफ मेंटल हेल्थ एण्ड इलनेस) नाम से एक आयोग का निर्माण किया जिसने 1961 मे सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपी इस रिपोर्ट मे कई ऐसी बातें थी जिससे सामुदायिक मनोविज्ञान आंदोलन की ओर लोगों का ध्यान गया इसी आयोग ने मानसिक अस्पताल की संख्या कम करने और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र खोलने की सिफारिश की। 1963 मे अमरीकी कांग्रेस ने राष्ट्रपति जान एफ कैनेडी John F. Kennedy के नेतृत्व मे इसे कानून का रूप दे दिया। जिसका मूल उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य की जल्द से जल्द पहचान करना तीक्ष्ण समस्याओं का उपचार करना तथा रोगी को अस्पताल न भेजकर उसे समूह या समुदाय मे रखते हुए उपचार करना था।

उसके बाद 1965 मे बोस्टोन Bostone मे मनोवैज्ञानिकों का एक सम्मेलन हुआ जिसमे सामुदायिक मनोविज्ञान का औपचारिक रूप से जन्म हुआ। इसी सम्मेलन मे निर्णय लिया गया था कि सामुदायिक मनोविज्ञान को नैदानिक मनोविज्ञान के समानांतर मानते हुए इसे एक भिन्न शाखा माना गया जिसका उद्देश्य व्यक्तियों के कई-2 समूहों को अपने समूह मे रहते हुए व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं को सुलझाना तथा उनका सही उपचार करना था। इसी सम्मेलन के बाद शीघ्र ही APA American American psychological association के तहत एक विशेष डिविजन जिसे सामुदायिक मनोविज्ञान का डिविजन कहा गया की शुरुआत की गयी इस क्षेत्र मे किये जाने वाले शोधों को प्रकाशित करने हेतु दो जरनल- The community mental health Journal and American Journal of community Psychology का भी शुभारंभ किया गया। सामुदायिक मनोविज्ञान की पुस्तकें भी प्रकाशित हुई जिसमे रैपापोर्ट Rapapport 1977 तथा मन mann 1978 की पुस्तक काफी लोकप्रिय हुई।

Scanned with CamScanner

अमरीका मे 1977 तक मानसिक स्वास्थ्य आंदोलन कुछ कारणों से फीका पड गया। मर्फी Murphy & फ्रेंक फ्रेंड Frank ने इसके कारणों के बारे मे बताया कि - मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सामुदायिक दृष्टिकोण से समस्याओं का समाधान कम तथा नयी-2 समस्याओं की उत्पत्ति अधिक हो रही थी जिसकारण इस दृष्टिकोण को सही मानकर एक गंभीर और चीरकालिक मानसिक रोगी को मानसिक अस्पताल से हटाकर यदि परिवार या समुदाय में रखकर यदि देखभाल किया जाए तो इससे परिवार के अन्य सदस्यों पर अवांछनीय प्रभाव पडने की संभावना से भी इंकार नही किया जा सकता है। पुन: इस आंदोलन के फीका पडने का एक कारण उस समय कि राजनैतिक और वित्तीय स्थिति भी थी क्योंकि राष्ट्रपति कैनेडी इस आंदोलन के जितने समर्थक थे उनके बाद के राष्ट्रपति उतने ही विरोधी। परिणामत: इन केन्द्रों की सरकारी सहायता मे भारी कटौती कर दी गयी और आंदोलन की सांस धीरे-2 थमने लगी।

जब अमरीका मे सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम की सांस थमने ~~लगी~~ ही वाली थी कि WHO world health organization ने इस आंदोलन के महत्व को स्वीकार किया और पूरे विश्व मे इसे सक्रिय करने के ख्याल से 1978 मे सोवियत रूस के आल्मा एटा Alma Ata मे एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन ने महत्वपूर्ण घोषणाएं की जिसे आल्मा एटा की घोषणा के नाम से पुकारा गया। जिसमें 2000 तक संसार के सभी देशों के लोगों के लिए वांछनीय स्वास्थ्य की स्तर प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया। जिससे सामुदायिक मनोविज्ञान के विकास का मार्ग प्रशस्त होता गया।

~~अब~~ यहां कुछ ऐसे कारकों का उल्लेख किया जा रहा है जो सामुदायिक मनोविज्ञान की उत्पत्ति और विकास मे महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाए —

1. मानसिक अस्पतालों में दिए जाने वाले उपचार सुविधाओं से असंतोष - Dissatisfaction with the treatment facilities of mental hospital - उस समय की मानसिक अस्पतालों में रोगियों के उपचारों के अपर्याप्त और मानवीय सुविधाओं की कमी थी। इस समय रोगियों को उपचार केन्द्र में कैद कर अमानवीय हालतों में रखने की परंपरा थी। साथ ही प्रशिक्षित चिकित्सकों की भी कमी थी। सम्पन्न व्यक्ति के लिए तो निजी अस्पताल थे। लेकिन गरीबों एवं मध्यम वर्गीय का लोटा तो सरकारी अस्पतालों की तरफ ही लगा रहता था। मानसिक अस्पतालों की यही बदतर अवस्थाओं वैकल्पिक सुविधाओं की ओर मनोवैज्ञानिकों को जागरूक किया जिसका परिणाम यह हुआ कि सामुदायिक मनोविज्ञान आंदोलन के तहत संबंधित नए-२ सेवाओं पर अधिक बल डाला गया।

2. कर्मचारी की कमी - Shortage of Personnel - इस समय प्रशिक्षित कर्मचारियों की भी काफी कमी थी कुछ कर्मचारी प्रतिवर्ष प्रशिक्षण पूरा भी करते थे तो उनकी मांग अधिक थी और संख्या कम जिसकारण कुछ निजी अस्पतालों में ही शोध कार्यों में लग जाते थे जिनसे सरकारी अस्पतालों में कर्मचारियों की कमी होती गयी इस समस्या से निजात पाने हेतु नए मॉडल की आवश्यकता महसूस हुई और एक नयी आवश्यकता ने सामुदायिक मनोविज्ञान की उत्पत्ति को बल दिया।

3. मनोचिकित्सा की प्रभावशीलता के बारे में आशंका - Apprehension about the effectiveness Psychotherapy — अधिकतर लोगों के मन में यह आशंका उठने लगी कि मनोचिकित्सा मानसिक रोगी के उपचार की उचित विधी नही है। क्योंकि यहां कारण सिर्फ रोगी में ही खोजने का प्रयास किया जाता है जबकि व्यक्ति तथा समाज के बीच होने वाली अंतःक्रिया की उपेक्षा की जाती है मानसिक रोग

सामाजिक आर्थिक स्थिति से काफी संबंध होता है और 1945-55 के बीच इसी के अनुरूप रोगियों का उपचार किया जाता था। जैसे गरीब मानसिक रोगियों को लघु सहायक उपचार तथा बिजली आघात देकर तो अमीर मानसिक रोगियों को गहन चिकित्सा यांत्रिक चिकित्सा दी जाती थी साथ ही इस चिकित्सा में समय श्रम तथा धन की जरूरत होती थी जिससे मनोचिकित्सा की घटती प्रभावशीलता ने मनोवैज्ञानिकों को इसके विकल्प के रूप में सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य आंदोलन की ओर अपनी रुचि दिखायी जिसका प्रतिफल हुआ कि सामुदायिक मनोविज्ञान को कार्य क्षेत्र की तरफ लोगों की रुझान बढने लगी।

4. मेडिकल मॉडल तथा वृत्तिक भूमिकाओं से असंतोष – Dissatisfaction with medical models and professional roles – 1960 में कुछ ऐसी घटनाएं घटी जिससे मेडिकल मॉडल की मान्यता कि मानसिक रोग का कारण कुछ आंतरिक गड़बड़ी होती है का उसके उपचार संबंधी पौराणिक विचार उखड़ गए और लोग मानसिक समस्याओं के सामाजिक सामुदायिक तत्वों पर बल देने लगे अब मानसिक समस्याओं के इन बदलते हुए परिपेक्ष्य में समझने की आवश्यकता और मेडिकल दबदबा से मुक्त होने की इसी इच्छा ने मनोवैज्ञानिकों को सामुदायिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में आशा की एक नयी किरण दिखायी दी।

5. सामाजिक वातावरण Social Environment – अब ऐसा माना जाने लगा कि मानव ~~समस्याओं~~ का समस्याओं को मात्र दमन या व्यवहारात्मक संग्रहण के रूप में समझना उचित नही है वरन इसे सही ढंग से समझने के लिए सामाजिक कारकों जैसे गरीबी नौकरी से विच्छेद, बेरोजगारी, प्रदूषण, भीड़ भाड़

HISTORY OF COMMUNITY PSYCHOLOGY

आदी को समझना आवश्यक है। लोगों की समस्याओं से निबटने के लिए यह महसूस किया जाने लगा कि मनोवैज्ञानिकों को इन कारकों पर बल डालना अति अनिवार्य है और उन्हें प्रारंभिक अवस्थाओं की बाल्यावस्थाओं की घटनाओं के रूप में ही मानव समस्याओं को समझने की पुरानी आदत से ऊपर उठना चाहिए ऐसी अनुभूतियों ने सामुदायिक मनोविज्ञान के कार्य क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों की रुची बढ़ी।

6. समय की पुकार ~~जिटगिस्ट~~ जिटगिस्ट — Tenor of the time : ZEITGEIST —
1950-60 की अवधी भी काफी महत्वपूर्ण है उस समय ~~जिटगिस्ट~~ जिटगिस्ट यानि समय की पुकार ही ऐसी थी जिनसे सामुदायिक मनोविज्ञान को काफी प्रेरणा मिली। अमरीका में केनेडी & जोन्सन ने कई ऐसे कानून बनाये जिसमें ~~विभेद~~ विभेद, गरीबी एवं अवसर की कमी को ही मानवीय समस्याओं की जड़ समझकर उसे दूर करने के यथार्थ उपाय किये गए ऐसे विचारों पर गृह अधिकार आंदोलन civil ~~rights~~ movements का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा इन सबका परिणाम यह हुआ कि मनोवैज्ञानिकों में ऐसे कारकों के प्रति सजगता बढ़ी और वे मानव समस्याओं एवं उपचारों में ऐसे कारकों को महत्वपूर्ण स्थान देना प्रारंभ कर दिया जिससे सामुदायिक मनोविज्ञान की प्रगति में तीव्रता आयी।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि सामुदायिक मनोविज्ञान का इतिहास काफी उतार चढ़ाव ~~के बाद~~ तथा ऊपर वर्णित कुछ कारकों के संपोषण का परिणाम है।

04/05/2020